# जापान के गांधी
# टोयोहिको कागावा



पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

# जापान के गांधी— टोयोहिको कागावा

टोयोहिको कागावा अपने पिता के गोद लिए पुत्र थे। इनकी जननी एक अनाथ विधवा थी। वह इतनी गरीब थी कि बच्चे का पालन-पोषण नहीं कर सकती थी। इसके साथ ही वह उस समय के जापानी जीवन की शिकार बनी हुई थी। निर्धनता तथा नैतिक दुराचार की विभीषिका ने उसका जीवन नारकीय बना दिया था। यह उस समय के पतित जापानी समाज में गरीब और निम्न वर्ग की स्त्रियों के लिए एक विवशता थी।

कागावा की माता अपने उस निकृष्ट तथा नारकीय जीवन के प्रभाव से बच्चे को बचाना चाहती थी। निदान स्वरूप उसने उसे कागावा नाम के मुखिया को गोद दे दिया था। मुखिया कागावा का यही दत्तक पुत्र टोयोहिको कागावा, आगे चलकर अपनी दया, उदारता, सहानुभूति, त्याग तथा सेवाओं के आधार पर जापान के गांधी—कागावा के नाम से सम्मानित तथा लोकप्रिय हुआ।

कागावा को अपनी जननी और उस जैसी असंख्यों स्त्रियों के नारकीय जीवन की कथाओं तथा दृश्यों ने इस सीमा तक प्रभावित तथा प्रेरित किया कि उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन ही समाज-सेवा तथा सुधार के लिए समर्पित कर दिया और आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक तथा अनेक शारीरिक बाधाओं के होते हुए भी, जब तक अपने ध्येय में सफल न हो गये, चैन की साँस न ली।

कागावा ने अपना जीवन तथा समाज-सेवा का कार्य घोर निर्धनता की स्थिति में प्रारंभ किया। आगे चलकर उन्हें लाखों रुपयों की वार्षिक आय हुई, तथापि उन्होंने न तो कभी पेट भर खाया ही और न तन भर कपड़े ही पहिने। अपनी सारी आय उन्होंने समाज के सुधार और दीन-दुःखियों की सेवा में ही लगा दी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



कागावा अपने जिस समाज का सुधार करने के लिए व्रतवंत हुए थे, उनका रोमांचकारी पतन किस सीमा तक पहुँचा हुआ था, इसका कुछ अनुमान कागावा के उन पीड़ापूर्ण उद्वेगों से लगाया जा सकता है, जो उन्होंने अपनी एक पुस्तक के संदर्भ में प्रकट किये हैं और उन्हीं से इस बात का भी अंदाज किया जा सकता है कि कागावा का सेवा-क्षेत्र कितना विस्तृत, दुरूह तथा आवश्यक था ? वे लिखते हैं—

"मेरी पुस्तकों के पढ़ने वालों की संख्या कम नहीं है, किंतु मेरे जीवन का उद्देश्य ग्रंथ-रचना ही नहीं है। मैं तो एक सैनिक मात्र हूँ और जन-मानस को जाग्रत् करने के लिए आंदोलन करना ही मेरा मुख्य काम है। मेरे ग्रंथों में मेरी आत्मा रोती है और जो भी सहृदय मेरी आत्मा के उस रुदन को सुनता और समझता है, वही मेरा सच्चा मित्र और स्वजन है।"

"जापान के साढ़े पाँच सौ वेश्यालयों को दफन करना, पंद्रह करोड़ पौंड की शराब-धारा को रोकना, चौरानवे लाख मजदूरों का उद्धार करना और दो करोड़ किसानों को स्वाधीन बनाना ही मेरे जीवन की आशा और उद्देश्य है और इसी उद्देश्यपूर्ण आशा से मैं अपनी पुस्तक सर्व-साधारण की सेवा में समर्पित कर रहा हूँ।"

"मनुष्य की अंतरात्मा ही राजनीति है, अर्थशास्त्र है, शिक्षा है और विज्ञान है। इसलिए मनुष्य की आत्मा को सुसंस्कृत बनाना ही सबसे अधिक आवश्यक है। यदि हम सब अपनी आत्मा को परिष्कृत बना सकें, तो राजनीति, अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान की समस्याएँ स्वयं ही हल हो जायेंगी। मेरा यह भाषण मात्र वक्तृता नहीं, मेरे अंतरात्मा की करुण पुकार है।"

इतने विशाल सेवा-क्षेत्र में अपने उद्देश्यों को मूर्तिमान् करने वाले कागावा ने कौन से संकट नहीं उठाये ? किंतु जापान का वह पथ-प्रदर्शक ध्रुव तारा जरा भी विचलित न हुआ। दूध पीते हुए मजदूर माता का स्तन छूटा। चार साल की आयु में गोद लेने वाला पिता छोड़ गया और छह महीने के भीतर ही विमाता तथा कर्कशा दादी ने अपने निर्दय व्यवहार से अनुभव करा दिया कि वह एक अनाथ और आश्रयहीन बालक है। संसार में उसका कोई नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


कभी कहीं उसकी एक माता रही है, जो अब तक समाज की भयंकरताओं की भेंट चढ़कर समाप्त हो गई होगी। बालक कागावा जन-जन का मुँह तकता और डबडबाई हुई आँखें नीची कर लेता।

वह विमाता को माता कहकर आँचल पकड़ना चाहता, किंतु उसे मिलता एक घृणा भरा झटका। उसे कागावा से इतनी घृणा थी कि वह उससे कभी बोलती ही न थी। न जाने कैसी स्त्री थी ? क्या उसके पूरे अस्तित्व में मातृत्व का एक बिंदु भी नहीं था ? 'माँ' कहकर पुकारते हुए किसी बालक को 'बेटा' कहकर पुचकार देने में उसकी कौन-सी निधि नष्ट हो जाती ? किंतु जिन अभागिनियों की भाग्य-रेखा में श्रेय के अक्षर नहीं लिखे होते, वे ऐसी ही कठोर तथा कर्कश प्रवृत्तियों को प्रश्रय दिया करती हैं। कागावा को जो बनना था वह बना ही, किंतु अवसर होने पर भी वह विमाता जापान के गांधी की माता बनने का गौरवपूर्ण महत्त्व न पा सकी। अपने संयोग से मरते-जीते अनाथ कागावा के 'माँ' कहने पर यदि वह प्यार से उसे 'बेटा' कहकर मातृत्व का प्रमाण दे सकी होती, तो क्या आज कागावा के साथ उसका भी नाम मानवता के इतिहास में अमर न हो जाता ?

और दादी ! वह विमाता से भी गई-गुजरी थी। उसने मानो अपने सारे जीवन का क्षोभ और कुंठा उतारने का लक्ष्य कागावा को ही बना रक्खा था। वह उसे खाने-पहनने को जो देती थी, वह आगे की बातों से पता चल जायेगा। यहाँ पर उसका वह दुर्व्यवहार बतला दिया जाये, जो वह असहाय कागावा के साथ करती थी और जिसको सहन करता हुआ कागावा अगले जीवन की कठोरताओं का मानो पूर्वाभ्यास कर रहा था।

कागावा जब-जब उसके सामने पड़ता और जब तक बना रहता, जवानी की जर्जर बुढ़िया गालियों की बौछार किये रहती थी। जब कागावा का धैर्य उससे विचलित न होता, तो उसको मार लगाती। असहाय-आश्रित को पीटने के लिए किसी आततायी को किसी कारण की अपेक्षा नहीं होती। उसका असहाय और आश्रित होना स्वयं एक बहुत बड़ा कारण होता है। दूषित दृष्टिकोण और विकृत मनोवृत्ति वाले लोगों को निरपराधी में भी अपराध खोज लेते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


देर नहीं लगती। अस्वस्थ हृदय व्यक्तियों को किसी भी निस्सहाय का उठना, बैठना, बोलना, बात करना, हँसना, रोना, चलना-फिरना, यहाँ तक कि अपना दुखड़ा बतलाना भी अपराध जैसा ही लगता है। पता नहीं, ऐसे हृदयहीन व्यक्ति कैसे तो जीते हैं और जीते हुए कौन-सा सुख-संतोष अनुभव करते हैं ? जिसमें आत्मीयता की आर्द्रता नहीं, सहानुभूति और संवेदना की शीतलता नहीं, सहृदयता और सौहार्द्र की छाया नहीं, ऐसी श्मशान जैसी मृत जिंदगी जीवन की यातना के सिवाय और क्या कही जा सकती है ?

बुढ़िया का आतंक कागावा पर हर समय छाया रहता। यहाँ तक कि वह उसका सपना देखता और रात में डरकर नींद में ही पेशाब कर डालता। यह घटना तो उस दादी के लिए अत्याचार का उत्सव होती और वह उसे न केवल डंडों से पीटती ही थी, बल्कि लोहे की गरम चीजों से चहकाती और जलाती भी थी। किंतु धन्य थे मनुष्यता के अवतार कागावा कि मनुष्य से इतनी यंत्रणा पाने पर भी मनुष्यता की भलाई के लिए न केवल अपना तन, मन, धन ही दे डाला, बल्कि अपनी आँखें, स्वास्थ्य, आरोग्य, बल, विद्या आदि जो कुछ था, सब दे डाला और जब इस आत्यंतिक उत्सर्ग से भी संतोष न हुआ, तो अंतरात्मा के वे आँसू दे डाले, जिनका मूल्य भक्ति या मुक्ति कुछ भी हो सकता था। दादी के दिये वे दाग कागावा के शरीर पर आजीवन बने रहे और उस अंधी कोठरी को तो वे कभी भूले ही नहीं, यंत्रणा के बाद जिसमें वे भूखे-प्यासे बंद कर दिये जाते थे।

समाज में यदि दादियाँ ऐसी होने लगें, तब तो उनका जरा-जीर्ण शरीर और विकृत मुखाकृति को देखकर बच्चे और भी डर जाया करें। किंतु दादी तो दया की देवी होती है। माता-पिता से भयभीत बच्चे उसकी गोद में ही तो छिपकर अभय पाते हैं। किंतु कागावा की दादी देवी नहीं दानवी थी। अपने समय में उसने जो असावधान जिंदगी जी और उस ईश्वरीय प्रसाद की जो लूट मचाई, उसी के दंड स्वरूप उसके हृदय की सारी सरसता सूख गई और सारा अस्तित्व सदा-सर्वदा के लिए अस्वस्थ हो गया। अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


कलुष और कुंठा की अभिव्यक्ति का माध्यम उसने कागावा को बना लिया।

वह दयाहीन दादी बालक कागावा से कड़ा से कड़ा काम लेती। घोड़े के लिए घास खोदने भेजती, तालाब से जिस दिन ढेर-सी मछलियाँ न लाता, उस दिन न केवल पीटा ही जाता, बल्कि घर के जूठे टुकड़ों से भी वंचित कर दिया जाता। घर की सफाई और बर्तनों का माँजना, धोना कागावा के ही सुपुर्द था। किंतु सहनशील कागावा यह सब बिना किसी उपालंभ के करता और अपने अंतर की महानता को पालता रहा।

इतनी यातना उठाने और काम करने पर भी कागावा को पेट भर भोजन न मिलता था। कपड़ों के नाम पर उसे प्रायः नंगा ही रहना पड़ता था। हाँ, उसके पेट को पूरा भोजन मिलने की एक ऋतु आती थी। वह यह कि जब धान की बुवाई और कटाई के दिन आते थे ! उन दिनों कागावा किसान बालकों के साथ दिन भर खेतों में काम करता रहता था और शाम को जरूर इतना पा जाता था कि तृप्ति के सुख का अनुभव कर लेता था। उसकी इस कमाई का बहुत-सा भाग उसकी दादी और विमाता झटक लेती थी। बालक कागावा वहीं खेतों पर धान के पौधों से अपने लिए कपड़ा गढ़ लेता था और काफी दिन अपना तन ढके रहता था। यह था कागावा का प्रारंभिक जीवन, जिसकी कठोरता और कठिनाइयों ने उसे इतना सहिष्णु तथा संवेदनशील बना दिया कि वह समाज की सराहनीय सेवा कर सका।

समाज की सराहनीय ही नहीं महत्त्वपूर्ण सेवा करने वाला कागावा, उसी अपने समाज द्वारा कितना पीड़ित और तिरस्कृत किया गया था, उसका एक छोटा-सा उदाहरण यह है—उसके परिवार वालों का जो दुर्व्यवहार उसके साथ था सो तो था ही, उस उपेक्षित बालक को पीड़ा पहुँचाने में गाँव वालों ने भी कुछ उठा न रक्खा।

एक बार पड़ोस की एक सोलह साल की लड़की को सख्त चोट लग गई। वह उस आघात से इतनी घायल हो गई थी कि प्राणों का संकट उपस्थित हो गया। बेहोशी के कारण वह यह न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



बतला सकी कि वह चोट उसे कैसे लगी ? पर असहाय के प्रति तो बहुधा लोगों का कोप भाव ही बना रहता है। फिर उस असहाय को तो लोग विरोध की दृष्टि से ही देखते हैं, जिसके आश्रयदाता स्वयं उसकी उपेक्षा करते हों। लड़की के घर वालों ने अपना क्षोभ उतारने के लिए झट कागावा का नाम धर लिया। वाह रे समाज, तेरे अत्याचार के लक्ष्य निर्बल और निरुपाय ही हुआ करते हैं और तभी तू उनकी आहों और यातनाओं के साथ स्वयं भी जला और मरा करता है।

उक्त लड़की के घर वालों के इस झूठे आरोप का अनुमोदन कागावा के घर वालों ने तुरंत कर लिया। किंतु कागावा को इसका दुःख न हुआ। दुःख उसे तब हुआ कि जब उसने देखा कि गाँव वाले भी उसे दोषी मानते हैं। इस मिथ्या और सार्वजनिक समर्थन ने बालक कागावा का हृदय विदीर्ण कर दिया। वह अपनी वेदना को सह न सका और तीन दिन तक बिना कुछ खाये-पिये रोता रहा। कागावा के पास उस समय सात-आठ रुपये थे, जो उसने धान के खेतों पर काम करके भविष्य के लिए बचा रखे थे। वह उन्हें लेकर लड़की के पिता के पास गया और दवा-दारू के लिए देकर क्षमा भी माँगी ! इस मिथ्या आरोप और उसकी स्वीकृति ने कागावा के हृदय में एक ऐसे निर्वेद को जन्म दे दिया, जिसने उसे मनुष्य से देवता और सामान्य से संत बना दिया।

उस समय कागावा गाँव की प्रारंभिक पाठशाला में पढ़ता था। पर इस घटना से उसका मन गाँव से उचट गया और वह उस अवा नाम के गाँव को छोड़कर संसार में आश्रय खोजने चल दिया। चलते समय उसका हाथ पकड़कर रोकने वाला कोई भी नहीं था। इस एकाकीपन के भाव से कागावा का हृदय आँखों में झलक आया उसने चलते समय दादी और विमाता से बड़ी मार्मिक विदा माँगी और आशा की कि शायद अब सदा-सर्वदा के लिए जाते हुए अपने इस कोप भाजन के लिए वे सहानुभूति के दो शब्द दे सकें, किंतु उन दोनों शुष्काओं के पास इसका सर्वथा अभाव था। उन्होंने सिर से अपना भार टलता हुआ समझा और कागावा सिसकता हुआ चला गया। जिनकी शक्तियाँ, जिनकी भावनाएँ और जिनका जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


सार्वजनिक सेवा के लिए सुरक्षित रखा जाता है, कदाचित् परमात्मा की इच्छा उनके चारों ओर ऐसे निर्मोह का ही वातावरण उत्पन्न कर देती है। किंवा हो सकता है कि इसी निर्मोह की प्रतिक्रिया व्यक्ति के संकीर्ण व्यामोह को सार्वलौकिक प्रेम में विस्तृत कर देता हो। कुछ भी सही, पर इतना निश्चय है कि जीवन की कठिनाइयाँ समाज की उपेक्षा और मोह-बंधनों का खंडन इस बात का स्पष्ट संकेत होते हैं कि अमुक व्यक्ति किसी महान् कर्तव्य के लिए निर्मित किया जा रहा है, जिसके लिए उसे सजग, सावधान तथा सक्रिय हो जाना चाहिए। जिन्होंने इन मार्मिकताओं का महत्त्व समझा और उन्हें साहसपूर्वक जीवन में स्वीकार किया, वे संसार तथा समाज के महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बने हैं और इसी प्रकार जो आगे भी समझेंगे, वे महान् तथा महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बनेंगे।

आश्रय खोजता हुआ कागावा अवा से टोकोशिमा आया और चाहा कि किसी स्कूल में प्रवेश और कोई छोटा-मोटा काम मिल जाये। पर उसे बहुत समय तक निराश तथा निस्सहाय रहना पड़ा। तथापि वह हतोत्साह न हुआ और अपना प्रयत्न जारी रक्खा। इसी क्रम में एक दिन उसने टोकोशिमा के एक मिडिल स्कूल के अध्यापक श्री काटायामा से भेंट की।

श्री काटायामा एक उदार चेतना व्यक्ति थे। उन्होंने कागावा की करुण-कथा सुनी और समझ लिया कि वह सहायता तथा सहानुभूति का उपयुक्त पात्र है। इस निराश्रित बालक को आश्रय मिलना ही चाहिए। सच्चे सज्जन व्यक्ति अपने सद्विचारों को कार्य रूप में परिणत करने में अधिक किंतु-परंतु में समय खराब नहीं करते। निदान स्वरूप काटायामा ने कागावा को न केवल स्कूल में ही भर्ती करा दिया, बल्कि बेटे की तरह अपने घर रख लिया। जीवन में प्रेम की एक बूँद के लिए कलपने वाला कागावा का हृदय शिक्षक के उस सौहार्द्र की अनुभूति से फूल की तरह खिल उठा, उसके सारे गुण अपनी प्रतिभा के साथ प्रबुद्ध हो उठे और वह जीवन के ठीक-ठीक मार्ग पर ठीक दिशा की ओर चल पड़ा। विगत जीवन की उसकी सारी कटु और करुण-अनुभूतियाँ प्रेरणा बन कर उसकी सहायिका हो गईं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



कागावा उन मूर्ख व्यक्तियों में से न था, जो आश्रय पाकर आलसी और अकर्मण्य हो जाया करते हैं। अपने विगत कष्टों को सोच-सोचकर अधिक से अधिक आराम उठाने की सोचा करते हैं। काम करने में टाल-मटोल करते हुए यह समझ लेते हैं कि उनकी यह निष्क्रियता उनकी पूर्व की कठिनाइयों के संदर्भ में उचित समझ ली जायेगी। किंतु कागावा उस प्रकार का लड़का नहीं था। उसे उस प्राप्त अवसर का अधिक से अधिक सदुपयोग करने का ध्यान रहता था और इस बात का संकोच रहता था कि कोई यह न सोचने पाये कि जिस लड़के को सहयोग दिया गया है, वह इसके योग्य था नहीं। वह इस बात से भी निरपेक्ष नहीं था कि भले ही उसके सहायक शील-संकोचवश कुछ न कहें तब भी उसका आलस्य तथा कर्तव्य के प्रति उपेक्षा उसकी वैयक्तिक उन्नति में तो बाधक बनेगी ही।

कागावा ने अध्ययन में अपना पूरा मन लगा दिया। वह पढ़ने में इतना परिश्रम करता कि कक्षा में सबसे आगे रहता और पूछे जाने वाले प्रश्नों का उत्तर तुरंत दे देता। उसने अपना स्वभाव इतना अध्ययनशील बना लिया था कि वे पढ़ाये पाठों को अपने आप ही तैयार कर लिया करता था। उसने भूलकर भी कभी अपना एक क्षण बेकार नहीं खोया।

अध्ययन में इतना परिश्रम करने के साथ-साथ कागावा अपने सहायक शिक्षक काटायामा के घर का सारा काम भी करता था, वह बाजार से सारा सामान खुद लादकर लाता। घर की सफाई और बर्तनों को माँजना, धोना तो मानो उसका अपना काम ही था। इसकी दक्षता तो वह दादी के कठोर शासन में सिद्ध ही कर चुका था। संरक्षकों के बहुत मना करने पर भी कागावा सबके कपड़े अपने हाथ से धोता और कोयले भी खुद ही तोड़कर अंगीठी के योग्य बना दिया करता था। कागावा ने घर का सारा काम इस ढंग से अपने ऊपर उठा लिया था कि वह उन दंपत्ति का न केवल प्रिय-पात्र ही बल्कि आवश्यक पात्र बन गया था। इस प्रकार अध्ययन तथा सेवा द्वारा कागावा ने किसी की सहायता को सार्थक बनाकर दिखला दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


टोकोशिमा की स्कूली शिक्षा पूरी करके कागावा जब टोकियो के प्रेसवीटेरियन कॉलेज में अध्ययन करने के लिए प्रविष्ट हुआ तब उसकी अध्ययनशीलता और भी कई गुनी बढ़ गई। उसने दो वर्ष में ही अपने पाठ्यक्रम के साथ-साथ कॉलेज की विशाल लायब्रेरी के सभी अच्छे-अच्छे ग्रंथ पढ़ डाले, जिससे उसकी योग्यता अनेक विषयों में विद्वानों के समान हो गई।

इसी समय कागावा ने बौद्ध-धर्म, ईसाई और अनेक अन्य धर्मों का अध्ययन करने के साथ-साथ बाईबिल और कन्फ्यूसियस के ग्रंथों का गूढ़ अध्ययन किया। इसका उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके हृदय में निहित दया, करुणा, संवेदना, सहानुभूति, प्रेम तथा परोपकार के निहित बीज अंकुरित हो उठे और वे सत्कार्यों की ओर प्रवृत्त हो चले।

एक दिन कॉलेज से लौटते समय कागावा ने देखा कि एक बिल्ली का बच्चा एक मोरी में डूबा जा रहा है। बच्चा अपनी नन्हीं-सी म्याऊँ-म्याऊँ से सहायता के लिए लोगों को पुकार रहा था और अपने छोटे-छोटे पैरों से बचने की व्यर्थ कोशिश कर रहा था। कागावा ने यह भी देखा कि लोग उस निरीह बच्चे की आवाज सुनते और उधर देखते भी, पर उसकी सहायता के लिए कोई भी न बढ़ता। लोगों के लिए उसका डूबना साधारण-सी बात लग रही थी। सभी देखते और यथावत् अपने रास्ते चले जाते थे।

पर कागावा की मनुष्यता उस बिल्ली के बच्चे का कष्ट न देख सकी। उन्होंने तत्काल ही उसके जीवन के प्रति लालसा को अपने प्राणों में अनुभव कर लिया और उन्हें ऐसा लगा मानो वे स्वयं ही डूबते हुए मरने की पीड़ा अनुभव कर रहे हों। कागावा का संवेदनशील हृदय तड़प उठा और वे तुरंत उसे डूबने से बचाने के लिए दौड़ पड़े। हाथों और कपड़ों की गंदगी का विचार किये बिना ही उन्होंने मोरी में उतरकर उस बिल्ली के बच्चे को बाहर निकाल लिया। बच्चा केवल अर्ध-चेतन अवस्था में हो चुका था। किंतु फिर भी उसने अपने रक्षक का सहानुभूति पूर्ण स्पर्श का अमृत अनुभव कर लिया और एक बार आँखें खोलकर म्याऊँ किया। मानो उसने कागावा का उस उपकार के लिए धन्यवाद दिया हो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



कागावा कुछ देर उसके पास रहे। जिससे कि वह पूरी तरह चैतन्य हो जाये और फिर अपनी माँ के पास चला जाये। थोड़ी देर में बच्चा पूरी तरह होश में आ गया। कागावा ने उसे प्रेम से थपथपाया और यह कहकर अपने रास्ते चल दिये—जाओ अब अपनी माँ के पास चले जाओ। कागावा अभी दो-चार कदम ही गये होंगे कि उनके कानों में छोटी-सी म्याऊँ फिर पड़ी। उन्होंने फिर कर देखा—बच्चा गिरता-पड़ता उनके पीछे दौड़ता चला आ रहा था। कागावा ने उसे फिर थपथपाया और जाने के लिए कहा। पर वह न गया और कागावा के पीछे चलता रहा। बेचारा अपने प्राणदाता को छोड़कर जाता भी कहाँ ? माँ से वह बिछुड़ चुका था, अस्तित्व की रक्षा में स्वयं समर्थ न था, संसार में कोई दूसरा दया करने वाला नहीं था। कागावा ने उसकी मजबूरी और उसकी वेदना अनुभव कर ली और उस निरीह पशु को हाथों में उठा लिया। उसके साथ दूर तक वह चल ही नहीं सकता था।

रास्ते चलते लोगों ने देखा और कहा—कैसा मूर्ख आदमी है, बिल्ली के गंदे बच्चे को हाथों में उठाये लिए जा रहा है। उधर फेंक क्यों नहीं देता ? कागावा ने सुना और मन ही मन कह लिया—ईश्वर हमारी इस मूर्खता को दिन-दिन बढ़ाता रहे। कई एक ने तो कागावा से कहा भी। कैसे गंदे आदमी हो ? इसे उधर फेंकते क्यों नहीं ? कागावा ने केवल इतना ही कहा—यह हमारा गहरा दोस्त है और अपने रास्ते चलते गये। घर आकर उन्होंने उसे नहला-धुलाकर साफ किया और साथी की तरह अपने कमरे में रख लिया।

इसी प्रकार एक दिन कागावा ने देखा एक सूखे, दुबले, कमजोर कुत्ते से कई संड-मुसंड कुत्ते लिपटे हुए हैं। वह बेचारा इधर-उधर भागकर अपनी जान बचा रहा है। लेकिन वह जिस आदमी की आड़ लेता है, वही उसे दुत्कार कर भगा देता है। कोई भी उस आपत्तिग्रस्त प्राणी की रक्षा करने को तैयार नहीं होता। कागावा को बड़ा दुःख हुआ। वह सोचने लगे, संसार में निर्बलता सबसे बड़ा पाप है। निर्बल स्वयं तो अपनी रक्षा कर ही नहीं पाता, कोई दूसरा भी उसकी रक्षा करने को तैयार नहीं होता। पर क्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



यही मनुष्यता है कि जिसकी रक्षा संभव है और जो निश्चय ही सहायता के योग्य है, उसकी भी रक्षा और सहायता न की जाय ? ऐसा करके भी यदि कोई अपने को मनुष्य मानता है, तो उसे यह भी सोच लेना चाहिए कि उसमें और इन आततायियों में कोई अंतर नहीं है, जो इस कमजोर को सता रहे हैं। यह सब भी इसे काटते-मारते हैं और वह भी इसे मारते-भगाते हैं। कितना अच्छा हो कि समाज में सब एक-दूसरे की सुरक्षा तथा सहायता को तत्पर रहें। ऐसी दशा में न कोई अत्याचार करने का साहस करे और न कोई सताया जा सके। कागावा बढ़े और उन्होंने उन बदमाश कुत्तों को भगाकर उस कमजोर की रक्षा कर दी। पर चलते समय वह मरियल कुत्ता भी बिल्ली के बच्चे की तरह उनके पीछे लग लिया। कागावा ने चाहा कि वह चला जाये, पर परोपकारी सज्जन को पाकर निराश्रित जाता भी कहाँ ? निदान विशाल-हृदय कागावा उसे भी यह कहकर साथ ले आये—चल भाई तू भी चल—और कमरे में रख लिया। उनके निश्छल प्रेम के प्रभाव से वह कुत्ता और वह बिल्ली का बच्चा मित्रों की तरह रहने लगे।

एक दिन लोगों ने देखा कि एक बड़ा ही फटे हाल भिखारी कागावा के पास सहारे के लिए आया और उन्हीं का अतिथि बन गया। बेचारा कमजोरी और बीमारी से त्रस्त सड़क के किनारे पड़ा कराहता हुआ जीवन और जीविका की याचना कर रहा था। यदि सहास न मिलता तो शायद दो-चार दिन में वहीं पड़ा-पड़ा मर जाता। कागावा ने उसे देखा और सहायता का पात्र भी पाया। ले आये और अपने साथ रख लिया। देखा तो बहुत से लोगों ने और शायद पिछले कई दिनों से देख रहे थे, तब भी कुछ न देख सके और हो सकता है कि सब कुछ देखकर भी अनदेखा कर दिया हो, क्योंकि समाज में तो—'हमें क्या मतलब'—वाली बीमारी जो चलती है। पर कागावा को तो हर दीन-दुःखी तथा आपत्तिग्रस्त से मतलब था और इसी संबंध में तो वह लक्षण होता है, जिसके आधार पर व्यक्ति महान् माना जाता है।

कागावा ने सोचा, अब तो हम एक से चार हो गये। सभी को पेट के लिए कुछ न कुछ तो चाहिए ही। कॉलेज से मिलते हैं कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



गिने-चुने रुपये ही छात्रवृत्ति में। जरूरी हो गया है कि कुछ काम-धंधा और मेहनत-मजदूरी देखूँ। कुत्ता और बिल्ली का बच्चा तो कुछ कर ही नहीं सकते और इस मनुष्य को अब भीख नहीं माँगनी है। जब तक यह और किसी काम के योग्य न हो जाये। इसे भी इन्हीं की तरह पालना ही है। कागावा ने कई लड़कों को पढ़ाना शुरू कर दिया और सारी आय के अनुपात से कुछ ऐसा प्रबंध कर लिया, जिससे रोटी, कपड़ा भी चलता रहे और कॉलेज का खर्च भी कम न पड़े। उन्होंने ऐसी भोजन-सामग्री चुनी जो एक साथ सबके काम आ जाये। आप खुद भी उसी योजना में अनुपात के अनुसार शामिल हो गये। कपड़ों के संबंध में अपने पुराने कपड़ों से ही अपना और भिखारी का काम चलाने लगे। कोट, पायजामा और जूते भी उसे इसलिए दे दिये कि वह बीमार था, उसको इनकी ज्यादा जरूरत थी।

इन तीन घटनाओं से तीन बातें हुईं। एक तो यह कि कागावा की सेवा-भावना पूरी तरह से न केवल प्रस्फुटित ही हो गई, बल्कि सक्रिय भी हो उठी। उनका दृष्टिकोण ऐसा बन गया कि अब चलते हुए उनकी दृष्टि समाज में उसी स्थान पर पड़ती, जहाँ पर उनकी सेवाओं की आवश्यकता होती। दूसरी यह कि भिखारियों तथा दीन-दुःखियों ने उन्हें अपना आश्रयदाता समझा और दूर से ही आते-जाते कागावा को पहचानने लगे, तीसरी यह कि नगर के गुंडों और बदमाशों ने उन्हें अमीर आदमी समझा और जब तब डरा-धमकाकर उनसे कुछ वसूल करने की कोशिश करने लगे।

कागावा का नित्य नियम था कि वे सायंकाल शहर की बस्तियों और सड़कों पर घूमते हुए यह देखने जाया करते थे कि समाज की वास्तविक अवस्था क्या है, सुधार की कौन-कौन-सी आवश्यकताएँ हैं और कहाँ पर, किनको उनकी सेवाओं की जरूरत है ? इसी भ्रमण के क्रम में वे नगर की एक बड़ी और घनी बस्ती शिंकावा भी पहुँच गये।

शिंकावा को बस्ती कहने की अपेक्षा उसे नरक का एक जीता-जागता कोना कहना अधिक उपयुक्त होगा। यह एक निहायत गंदी बस्ती थी, जो जापानी समाज की तत्कालीन तस्वीर को प्रकट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


करती थी। वह एक ऐसा नमूना थी जिसके आधार पर जापान की अधिकांश बस्तियों की दशा का अनुमान किया जा सकता था। कागावा ने शिंकावा को देखा। उनके हृदय पर गहरा धक्का लगा। वे सोचने लगे कि उफ ! हम सब एक ऐसे जापान में रहते हैं। हमारे देश का ऐसा घिनौना स्वरूप, हमारे राष्ट्र की यह दशा और हमारे समाज का यह पतन, जिसमें कि हम रहते हैं। क्या यह सब, जिनको मैं देख रहा हूँ, मनुष्य हैं ? यदि यह गंदे, घिनौने, पतित, अशिक्षित, अपराधी, पापी और व्यसनी मनुष्य कहे जा सकते हैं, तो इसी शब्द से पशु शब्द भी बदल दिया जाना चाहिए।

खेद, दुःख, ग्लानि और सहानुभूति की अनुभूति से कागावा की विचारधारा रुकी और फिर तत्काल ही दूसरी दिशा में बह चली और हम सब सभ्य, शिष्ट तथा शिक्षित कहे जाने वाले जापान के नागरिक इनके लिए क्या करते हैं ? क्या पढ़-लिखकर अपने में सभ्य और सुसंस्कृत बन जाने में हमारी नागरिकता और सामाजिकता समाप्त हो जाती है ? क्या हमारा अपने इन भाइयों, इन भूले-भटके सहसामाजिकों के प्रति कोई कर्तव्य नहीं है ? क्या हमारी सबकी मानवता खाने-कमाने और सोने-जागने तक ही सीमित है ? क्या हमें परमात्मा ने आँखें इसीलिए दी हैं कि हम इस गंदगी को देखें और चुपचाप एक ओर मुड़ जायें ? क्या हमारे बड़प्पन, हमारी धनाढ्यता और हमारी भद्रता का महत्त्व तभी है जब यह सब इसी प्रकार गंदे, असभ्य, गरीब और अपराधों के गुलाम बने रहें ? जापान के ये भयानक नरक, राष्ट्र के नाम पर एक कलंक हैं। मनुष्यता के नाम पर एक बोझ हैं। जिस राष्ट्र, देश और समाज की यह दशा है, उसकी उन्नत तथा सुख-शांतिपूर्ण हो सकने की संभावना संदिग्ध है।

जिनके सहसामाजिक और राष्ट्र-बंधु इस दुर्दशा में पड़े हों, उन शिष्ट तथा शिक्षित, धनी तथा साधन-संपन्न व्यक्तियों को कैसे तो नींद आती है और कैसे वे हास-विलासपूर्ण जीवन बिता पाते हैं ? समाज के प्रति यह उपेक्षा और यह निरपेक्षता किसी के लिए आत्मा में एक चोरी है, दुःशील और निर्लज्जता के साथ-साथ विश्वासघात है। जब तक समाज के सारे वर्ग एक सामान्य मानवीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


स्तर पर न आ जायें, किसी को क्या हक है कि वह धन का कोई भी भाग और जीवन का कोई भी हिस्सा नाच-रंग, हास-विलास और मौज-मनोरंजन में अपव्यय करे। समाज से पाई संपत्ति और ईश्वर से पाई जिंदगी, तब तक समाज और सृष्टि की सेवा एवं सुधार में ही लगाई जानी न्यायसंगत है, जब तक कि सबको मानवोचित जीवन का अवसर न मिल सके। सच्ची मनुष्यता का प्रमाण इसी प्रयत्न में है कि सभी अच्छे रहें, सभी अच्छे बनें और सभी निरामय हों।

सोचते-सोचते कागावा का हृदय और नेत्र दोनों एक साथ भर उठे और उन्होंने अपने में एक निश्चय—एक अडिग तथा अखंड निश्चय कर डाला और चल दिये। चलते-चलते अपने से कहते जाते थे—"कागावा ! तूने तो एक लंबी शिकायत कर डाली। जापान के सभी भद्र व्यक्तियों को कोस डाला। समाज के प्रति बड़ी गहरी सहानुभूति व्यक्त कर डाली और मनुष्यता की बड़ी ऊँची दुहाई दे डाली। लेकिन खुद भी कुछ करेगा या यों ही थोथी भावुकता की तरंगों में झूलता रहेगा। समाज की दशा का चित्र तूने देखा और अनुभूत किया है। विचार और वेदना तुझ में उत्पन्न हुए हैं, इसलिए तेरा पहला कर्तव्य है कि तू इन नरकों को सुधारने का जो भी प्रयत्न कर सके, करे। सद्विचारों का उदय होना जहाँ जीवन का पुण्य संकेत है, वहाँ उनको यथाशक्ति उपयुक्त दिशा में कार्यान्वित न करना पाप है, ईश्वरीय इंगिति की उपेक्षा तथा अवहेलना है। क्या तू इस पाप का भागी बनेगा ? कागावा के पैर तेजी से दृढ़तापूर्वक चलने लगे। जिनसे विदित होता था कि उनकी आत्मा ने पुण्य का पक्ष लिया है, पाप का नहीं। उसने यथाशक्ति कुछ करने का निश्चय कर लिया है।

शिंकावा की जिस बस्ती ने कागावा के हृदय में हलचल पैदा कर दी थी, निश्चय ही वह नरक का एक निदर्शन थी। उसमें चारों ओर गंदगी और दुर्गंध का वातावरण फैला हुआ था। टूटे-फूटे घिनौने घर, जिनकी अँधेरी कोठरियों में दस-दस परिवार घास-फूस की तरह भरे हुए थे। द्वार-द्वार पर मल-मूत्र के ढेर लगे हुए थे, जिनसे बचकर निकल जाना असंभव था। बच्चे वहीं खेलते और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



गंदे होते। उस लंबी-चौड़ी बस्ती में शौचालय के नाम पर केवल आड़ थी, जिसकी सफाई संभव न थी। स्त्री-पुरुष धक्का-मुक्की करते, साथ-साथ धँस जाते और बेपरदगी का लिहाज न करते थे। पानी के नाम पर एक गंदी तथा सँकरी गली में एक नल था। हर समय भीड़ लगी रहती थी। पानी भरने, नहाने और कपड़े धोने के लिए सिर फुटौवल मची रहती थी। बस्ती में खटमल, मच्छर और पिस्सुओं के साथ-साथ पानी और मल-मूत्र के कीड़े बजबजाया करते थे।

उस गंदी बस्ती में चोर, बदमाश, ठग, उठाईगीर, उचक्के, हत्यारे, वेश्यायें, दलाल, गठकटे, शराबी और जुआरियों की बहुतायत थी। रिक्शा खींचने वाले, कुली, मजदूर, सड़क खोदने वाले, शराब और अफीम बेचने वाले, सड़ी मिठाइयाँ और गली तरकारियाँ बेचने वालों के अतिरिक्त रमलिये और जालिये भी वहाँ रहते थे।

शिंकावा अपराध और अपराधियों का गढ़ था। साधारण-सी बात पर हत्या हो जाना और शराब की बेहोशी में खून-खराबा वहाँ की एक मामूली बात थी। लोगों को शराब पीते, जुआ खेलते और स्त्रियों से बुरी तरह लड़ते-झगड़ते और गाली-गलौज करते तो कागावा ने अपनी आँखों से देखा था। इतना ही नहीं—कागावा ने बच्चों को नंग-धड़ंग और गंदे शरीर लिए रोते-चिल्लाते और रोटी के लिए मचलते भी देखा। उन्होंने यह भी देखा कि बदमाश के हाथ में खुला छुरा है और वह किसी से कुछ वसूल करने के लिए मौत की धमकी दे रहा है। दिन के खुले प्रकाश में वेश्यालय चलते देखकर उस भद्र पुरुष की आँखें खुली न रह सकीं। उसने वेश्याओं के घरों से निर्लज्ज मानव-पशुओं को आते-जाते देखा और दलालों की बातें अपने कानों से सुनकर तो वह वहाँ खड़ा ही न रह सका। वह चल दिया और चलते समय उसकी आत्मा चीत्कार कर उठी—'हाय, क्या यही हमारा जापान देश है ? और हम इसी समाज के एक सदस्य हैं।

सभ्यता, शिष्टता और शिक्षा का तो वहाँ कोई नाम ही नहीं जानता था। स्वच्छता क्या होती है ? शायद बच्चे से बूढ़े तक कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



भी न जानता था। उनका परिचय तो गंदगी, दुर्गंध तथा निर्धनता से था। हम भी मनुष्य हैं और हमें भी मनुष्यों की तरह रहना चाहिए, वहाँ पर इसकी कल्पना किसी के वश की बात नहीं थी। प्रायः सभी निर्धन, सभी जड़ और सभी अपराधी थे। यह जापान की केवल एक बस्ती का हाल था और उस समय जापान में ऐसी बस्तियों की भरमार थी। इस कठिन और कलुषित स्थिति में कागावा ने इन्हीं लोगों के बीच सेवा और सुधार का कार्य प्रारंभ किया और अपनी उस तपस्या को करोड़ों रुपयों के साथ गंदी बस्तियों के सुधार की सरकारी तथा नागरिक योजना की सक्रियता के रूप में सफल होते भी देखा। इन तपस्वी कागावा का जन्म भी १० जुलाई, १८८८ को कोवे की एक ऐसी ही गंदी बस्ती में विषम परिस्थितियों में फँसी एक अज्ञात अबला की कोख से हुआ था।

कागावा अपने निवास स्थान पर आये और सामान बाँधने लगे। उनके साथियों ने आश्चर्य से पूछा—"कागावा ! कहाँ की तैयारी हो रही है ?" उन्होंने उत्तर दिया—"शिंकावा की। जहाँ की दशा मेरी सेवाओं का आह्वान कर रही है।" "उस गंदी और गलीज बस्ती में जहाँ चोर, उचक्के, उठाईगीर, बदमाश और वेश्यायें रहती हैं। वह स्थान तो किसी भले आदमी के रहने योग्य नहीं है।" साथियों ने कहा।

कागावा ने कहा—"और दूसरे भले आदमियों के रहने योग्य भले न हो, पर मेरे लिए तो है। मुझे वहाँ रहना है। मैं वहाँ रहूँगा और वहाँ के पथ-भ्रष्ट लोगों को ठीक रास्ते पर लाने का प्रयत्न करूँगा। बच्चों को पढ़ाऊँगा और दीन-दुःखियों की सेवा करूँगा। संगत से आदमी का बिगाड़ होता है और संगत से ही सुधार भी। शिंकावा में इस समय माना बुरे लोग रहते हैं। उनके बीच कोई ऐसा आदमी नहीं है, जो उन्हें मानवता की परिभाषा, उसका मूल्य और उसका प्रकार बतला सके। सब एक जैसी मनोवृत्ति तथा आचरण के लोग रहते हैं और एक-दूसरे को प्रेरित, प्रभावित तथा प्रोत्साहित करते हैं। यदि उनके बीच, अपना दंभ छोड़कर भले और अच्छे आदमी रहने और अपने आचार-विचार का प्रभाव डालने लगें, तो कोई कारण नहीं कि उस बस्ती के बिगड़े लोग उनकी संगति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


से सुधरने न लगें। मनुष्य बुराई को तब तक ही ग्रहण किये रहता है, जब तक उसे अच्छाई के दर्शन नहीं होते। अंधकार तभी तक रहता है, जब तक प्रकाश नहीं होता। मैं उनके बीच रहूँगा और मुझमें यदि कोई सच्चाई, अच्छाई और प्रकाश है, तो वहाँ का अंधकार अवश्य दूर कर सकूँगा।

कागावा अपना सामान लादकर शिंकावा आ गये और उन्हें वहाँ एक कोठरी भी मिल गई। कोठरी क्या थी, एक कोटर मात्र थी। उसका आयात केवल छत्तीस वर्ग फीट था। यानी छह फीट लंबी और छह फीट चौड़ी। न तो उसमें कोई वातायन था और न झरोखा। खिड़कियाँ होने का प्रश्न ही नहीं उठता। आते-आते ही उसके मिल जाने का एक विशेष कारण था। कुछ दिन पहले ही उस कोठरी में एक हत्या हो चुकी थी और लोगों की धारणा थी कि उसमें उस मृत व्यक्ति का भूत रहता है। इसी डर से कोई उसमें रहने का साहस न करता था और वह तब से ही खाली पड़ी थी। कागावा अंधविश्वास से परे थे। उन्हें न तो भय लगा और न उस जन-श्रुति का कोई प्रभाव पड़ा। उन्होंने उसे अपना निवास-स्थान बना लिया।

कोठरी गंदी, दुर्गंधित और सीलन वाली थी। किसी भले आदमी के रहने योग्य न थी। पर कागावा का लक्ष्य अच्छा निवास नहीं था। वे तो वहीं उन लोगों के बीच गरीबी में रहकर घुल-मिल जाना चाहते थे। उनका लक्ष्य था उन गरीबों की कठिनाइयों तथा दुःखों को अनुभव करना और उसी तथ्य के आधार पर उनकी आवश्यकताएँ समझना और उनका हल निकालना। वे अच्छी तरह जानते थे कि सुधार के लिए जब तक निर्धारित लोगों के आंतरिक जीवन को निकट से न देखा जायेगा तब तक सफलतापूर्वक काम कर सकना कठिन होगा। किसी को केवल उसका ऊपरी जीवन देखकर सुधार के प्रयत्न निश्चित कर उनमें ढालना गलत साँचे में किसी आकार की आशा करने के समान है। सुधार बाह्य का नहीं अंतर का किया जाता है।

मान लीजिए किसी की गंदगी का सुधार करना है और कोई नित्य जाकर उसके गंदे शरीर और गंदे कपड़ों की आलोचना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


करता है। कभी-कभी अपने हाथ से उसके वस्त्र भी धो देता है। पर इस तरह उसको स्वच्छ रहने का स्वभाव न हो सकेगा। जब तक उसे आलोचना की ग्लानि रहेगी, कहे जाने का डर रहेगा, तब तक वह भले ही सफाई रखे। इन आशंकाओं के तिरोहित होते ही स्वच्छता की उसकी विवशता भी जाती रहेगी। स्थायी रूप से तो स्वच्छ वह तब रहेगा, जब उसके हृदय में गंदगी के प्रति घृणा और सफाई के प्रति अनुराग हो। यह स्थायित्व स्वभाव परिवर्तन से ही आ सकता है और मनुष्य का स्वभाव तभी परिवर्तित किया जा सकता है, जब उसके भीतर घर किये उसकी कमजोरियों का पता लगा लिया जाये और उन्हीं के संदर्भ में उसे दुर्गुणों की अशोभनीयता और गुणों की शोभा बतलाई ही न जाये बल्कि अनुभूत कराई जाये।

कागावा सुधार प्रयत्नों की इन सूक्ष्मताओं से परिचित थे। इसीलिए उन्होंने उनके बीच रहना ही आवश्यक समझा। ऐसा करने में उन्हें कई सुविधाएँ दिखीं। एक तो यह कि उनके बीच रहकर वे उनके हो जायेंगे। अपने आचरण को उनके सामने खुली पुस्तक की तरह रखकर उनका विश्वास प्राप्त कर सकेंगे। वे लोग उनसे अभिन्नता के कारण अपने दुःख-सुख निःसंकोच रूप से उनके सामने रखेंगे। कागावा हर समय हर एक की गतिविधि को प्रामाणिक रूप से देख सकेंगे और उसमें से सत्यासत्य का सही निर्णय कर सकेंगे। वे घटना स्थल पर ही आवश्यकतानुसार लोगों को समझाकर संस्कार डाल सकेंगे। इससे उन्हें लाल लोहे पर चोट करने जैसा लाभ होगा। जब चाहेंगे कोठरी से निकलकर लोगों को जमा कर लेंगे और जो कहना चाहेंगे कह सकेंगे। उनकी शिक्षा, उनकी सफाई में सरलतापूर्वक सहायक हो सकेंगे। झगड़ों को बढ़ने से पहले ही शमन करा सकना आसान होगा और सबसे बड़ी बात यह कि वे पूरी बस्ती के अभिभावक की तरह उनके बीच रहेंगे। लोग उनका अदब और शील करेंगे और कई बार गलत कामों को बचा जाया करेंगे। यह भी सुधार मार्ग पर एक छोटा-सा चरण होगा। लोग खुले आम जो शराब पीते, जुआ खेलते, गाली-गलौज या वेश्यत्व करते हैं, उस पर एक प्रतिबंध-सा लग जायेगा और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


उसमें कमी आने लगेगी। भले और भद्र मनुष्य की उपस्थिति में उन्हें अपनी गंदी आदतें और बुराइयाँ अनुभव होंगी, जिससे नैतिक विकास का धरातल बनेगा। बुराई को जीवन न समझकर, बुराई समझने लगना भी सुधार की दिशा में एक अच्छा कदम है।

मनुष्य स्वभाव से नहीं संगत से बुरा बनता है और बुराइयों के प्रति तब तक आसक्त रहता है जब तक अच्छाई उसके बराबर नहीं आती। अच्छाई में अपना एक नैसर्गिक दबाव तथा प्रभाव रहता है, एक मोहक छटा रहती है, जो किसी पर भी अनायास ही छा जाती है। बुरा मनुष्य कितना ही उद्धत, धृष्ट और दुराग्रही क्यों न हो, अच्छाई के सम्मुख अपने को हीन तथा गिरा हुआ ही अनुभव करेगा। वह बाहर से भले ही प्रकट न करे, पर आत्मा से स्वीकार करेगा ही कि अमुक आदमी भला, ऊँचा और आदरणीय है, उसकी तुलना में मैं खोटा और पतित हूँ। उतनी देर को उसे अपने जीवन और अपने आचरण पर खेद तथा ग्लानि अवश्य होगी। साथ ही यह भी संभाव्य है कि वह वैसा बनने के लिए लालायित होगा। उनके वहाँ रहने से यह सारी प्रतिक्रियाएँ होंगी, उनका प्रभाव, दबाव, आचरण और आदर्श उन्हें सुधार की ओर आंदोलित करेगा। कागावा न केवल यह जानते ही थे बल्कि इसके परिणाम के प्रति विश्वासी भी थे।

अपने कार्य की आवश्यकता, क्रिया की सरलता और परिस्थितियों की अनुकूलता के लिए ही कागावा ने उस गंदी, अंधी और संकीर्ण कोठरी में रहना स्वीकार किया था। कठिनाई, असुख, असुविधा, तकलीफ, परेशानी, ऊब और विषमता जैसे शब्द तो उनके कोश में ही नहीं थे। वे तो सहिष्णुता, सहनशीलता तथा सामंजस्य की मानो प्रतिमूर्ति ही थे।

कागावा ने कोठरी में सामान रखकर ऐसा अनुभव किया मानो वे अपनी उस दुनिया में आ गये, जिसमें काम करने को उन्हें जन्म दिया गया है। सबसे पहले उन्होंने अपनी कोठरी की ठीक-ठीक सफाई की। फर्श खोदकर उसे हमवार किया और दीवारों तथा कोनों से गंदगी, कालिख और मकड़ियों के जाले दूर किये। फर्श की कुटाई तथा लिपाई करके उसे पक्का किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


अनंतर वे बाजार गये, वहाँ से कुछ कलई, कोयले, बाँस का कागज और सुगंधित सामग्री लाये।

अब उन्होंने दीवारों तथा छत पर खुद अपने हाथ से कलई की और कोयले दहकाकर उसे सूखने के लिए छोड़ दिया। जब तक दीवारें सूखें तब तक वे कोठरी से निकले, मिट्टी-कूड़े को दरवाजे के सामने से ले जाकर एक ऐसे स्थान पर कायदे से डालने लगे, जो घरों से कुछ दूर भी था और उपयुक्त भी था। मिट्टी-कूड़ा हट जाने के बाद उन्होंने बाहर की दीवारों की सफाई करके उन पर भी कलई कर दी, फिर झाड़ू लेकर जुट गये और सारा सामना साफ कर डाला। जमीन का आसार साफ करने के बाद वे नालियों में लगे और उन्हें पूरी तरह साफ करके पानी से धो दिया। उन्होंने नालियों को उस सीमा तक साफ किया कि कहीं पर पानी न रुके। इस सीमा में ऐसे अनेक घरों का सामना भी आ गया, जहाँ से वे नालियाँ बहती थीं। नालियों की सफाई तथा धुलाई के बाद उन्होंने उनके किनारे-किनारे पिसी सूखी कलई आखिर तक बुरका दी।

अब वे फिर कमरे में आये। दीवारें और छत काफी सूख चुके थे। उन्होंने उन पर कागज मढ़ा और कीलों के सहारे अच्छे-अच्छे कलेंडर व चित्र टाँग दिये। अपनी खूँटियों की प्लेट गाड़ी और उस पर आवश्यक कपड़े टाँग दिये। चारपाई, मेजों तथा तिपाइयों आदि को ठीक स्थान पर रखकर, उन पर किताब तथा आवश्यक चीजें चुन दीं और चौकी पर बरतन रख दिये।

इस प्रकार घर की सफाई तथा व्यवस्था करने के बाद कागावा नहाने के लिए नल पर गये। सबसे पहले वे उसकी सफाई में लगे। दूर-दूर तक चारों ओर उसका परिसर, स्थान तथा नाली के गढ़े न केवल साफ ही कर डाले, मिट्टी, ईंट, गिट्टी तथा कंकड़ों से उन्हें भर भी दिया। काई तो उन्होंने रगड़-रगड़ कर इस हद तक साफ कर दी कि उसकी मौलिक भूमि दिखलाई देने लगी। सबके साथ ही उन्होंने उस समय वहाँ उपस्थित कई स्त्रियों के बरतन भी अप्रत्याशित ढंग से रगड़कर चमका दिये। इतना करने के बाद वे एक ओर खड़े होकर नल खाली होने की प्रतीक्षा करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


लगे। पनिहारिनों ने समझ लिया कि यह भद्र व्यक्ति नहाने को खड़ा है। इसलिए अब उन्होंने जरा भी विलंब नहीं किया और न अपनी बारी के लिए झंझट खड़ा करके वक्त खराब किया और न नल पकड़कर सत्याग्रह किया। जल्दी ही सबकी सब पानी भर कर फुरसत पा गईं। कागावा ने खूब विमल-निर्मल स्नान किया और अपने निवास पर चल दिये।

स्वाभाविक था कि जब एक भद्र पुरुष नल पर तन्मयता से काम कर रहा था, तो वहाँ पर कोई गोलमाल न किया जाता। सारे लोग चुपचाप बिना किसी बहस और झगड़े के अपनी-अपनी उचित पारी पर पानी भरने लगे। जहाँ उन्होंने अभी अपनी आँखों से सफाई होते देखी थी, वहाँ गंदगी भी किस प्रकार की जा सकती थी ? थूक-खखार भी लोगों ने नल से दूर हटकर की। उस बस्ती के इतिहास में शायद यह पहला अवसर था, जबकि न तो लोगों ने झगड़ा किया, न गाली-गलौज की और न वक्त खराब किया। साफ स्थान पर गंदगी करने का तो किसी का मन हो ही कैसे सकता था ? एक सज्जन व्यक्ति की उपस्थिति तथा सक्रियता ने वह पनघट, जहाँ से झगड़ा प्रारंभ होकर वर्षों चलता रहता था, पुश्तैनी बन जाता था और कभी-कभी हत्या और खून-खराबा तक में परिणत हो जाता था, एक अनुशासन का स्थल बना दिया। एक बार अनुशासन की सुविधा और शांति के सुख और सारल्य का अनुभव होते ही, झगड़ा वहाँ से सदा के लिए दूर हो गया। लोग उस नल को सफाई और सुरक्षा करने वाले की संपत्ति समझने लगे और कायदे के साथ प्रयोग में लाने लगे।

कागावा कोठरी में आये और कपड़े बदलकर सबसे पहले उस सुगंधित द्रव्य की घनी आहुतियाँ अँगीठी में दीं। जिससे थोड़ी देर में न केवल उनकी कोठरी ही बल्कि सारी बस्ती ही महक उठी। लोगों ने उस अपूर्व गंध का अनुभव किया और दुर्गंधि में बसी उनकी आत्मा ओत-प्रोत होकर अनुभव कर उठी जैसे उसकी दुनिया ही बदल गई हो। वह सुगंध लोगों को स्पृहणीय लगी और उन्होंने बदबू और सुगंध का अंतर जाना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



शिवत्व में अशिव के प्रति जो एक नैसर्गिक विसंगति और वर्जन रहता है, उसकी प्रतिक्रिया बस्ती पर हुई। शराबियों को अपना नशा और शराब की बदबू भारी लगने लगी। उनका जी मिचलाने और सिर दर्द करने लगा। जुआरियों का जी उखड़ गया, वेश्यालय घिनौने लगने लगे और झगड़ने वालों का ध्यान बँटने लगा। विलासिता के भाव से नहीं कल्याण-कामना से, अँगीठी में कागावा की दी हुई सुगंधित आहुतियों ने सारी बस्ती में खबर कर दी कि उनके बीच कोई देवता आ गया है। सभी लोग सुधरें और सावधान जीवन को अंगीकरण करें। कागावा के आगमन, उनकी क्रियाओं, सफाई और सुगंध ने शिंकावा की उस गंदी बस्ती में एक अभूतपूर्व अनुभव उत्पन्न कर दिया। उनकी साफ-सुथरी और सजी हुई वह कोठरी जो भूतवास के नाम से बदनाम थी, एक मंदिर जैसी लगने लगी। लोग उसकी ओर सहज ही आकृष्ट हो उठे।

कागावा जब सब काम से निवृत्त होकर बाहर तिपाइयाँ और कुर्सियाँ डालकर बैठे तो लोग दर्शन, कौतूहल, नवीनता तथा जिज्ञासा के भाव से आने और अभिवादन करने लगे। कागावा स्नेह से उत्तर देते और कुशल प्रश्न करते। लोग प्रति उत्तर देते और अनुभव करते कि वे उनके आत्मीय हैं। क्रम चला और काफी देर चलता रहा।

जन-कल्याण की भावना से कागावा कुछ ऐसे बहुल व्यक्तित्व हो गये थे कि वे हर आदमी को उसकी आवश्यकता के अनुसार दिखाई देने लगे। एक लड़का आया, जिसके सारे शरीर में खुजली थी, बोला—"डॉक्टर साहब मेरी खुजली ठीक कर दीजिये, मैं मरा जा रहा हूँ।" कागावा ने कहा, "बैठो, मैं तुम्हारी खुजली का उपचार करूँगा।" एक जेल काटा हुआ हत्यारा आया और बोला—"पापा ! मेरे पीछे उस आदमी का भूत लगा है, वह मुझे मार डालेगा। मुझे उससे बचा दीजिए। कागावा ने आश्वासन देकर उसे भी बिठाल लिया। तभी एक भिखारी आया और गिड़गिड़ाने लगा—'बाबू, तीन दिन से पानी के सिवाय अन्न का एक दाना भी पेट को नसीब नहीं हुआ है। भूख से मर रहा हूँ। मेरी रक्षा कीजिए। कागावा ने उसे भी बिठाल लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


इन तीनों की कागावा ने केवल मदद ही नहीं की, बल्कि उन्हें अपने साथ ही रख लिया और सेवा करने लगे। भिखारी को तो उन्होंने ऐसी प्रेरणा दी कि वह तो मंगते से मजदूर बन गया। लड़के को उन्होंने दवा देने के साथ पढ़ाना शुरू किया और त्रस्त व्यक्ति को तो वे अपने पास ही रात में सुलाते और उसका भ्रम-विश्वास दूर करते। तीनों का सुधार हुआ और तीनों ठीक रास्ते पर लग गये। वे बेचारे आभार में और तो कुछ न कर सके, कागावा के स्थायी साथी और प्रचार-पात्र जरूर बन गये। उन्होंने कागावा के उपकार की इतनी जगह और इतनी बार चर्चा की कि लोग जल्दी ही उन्हें जान गये।

बस फिर क्या था, प्रसिद्ध उपकारी के पास जो भीड़ लगनी स्वाभाविक होती है, वह कागावा के पास भी लगने लगी। एक क्षय रोगी जीवन की आशा से, एक सनकी मनोकल्प के लिए, एक वेश्या उपदंश से पीड़ित और एक ट्रिकोमा का पीड़ित आँखों के उपचार के लिए और अनेक अपाहिज तथा अनाथ बच्चे आश्रम के लिए उनके पास आकर रहने लगे। कागावा ने किसी को निराश नहीं किया। सबको अपने साथ रख लिया और सबकी सेवा सहायता करने लगे।

पर इस बड़े परिवार की सेवा तथा सहायता में कागावा की दो कठिनाइयाँ आने लगीं। एक तो कॉलेज के कारण समय की और कॉलेज के केवल सोलह शिलिंग की आय होने के कारण पैसे की। इसके दो ही हल थे। एक तो यह कि कोई अंतरंग सहयोगी लिया जाये और दूसरे यह कि कोई अतिरिक्त मेहनत-मजदूरी की जाये।

मेहनत-मजदूरी के लिए तो कागावा ने जल्दी ही पंद्रह रुपये महीने पर लालटेनें साफ करने का काम खोज लिया। सहयोगी के विषय में सोचते-सोचते वे इस निर्णय पर पहुँचे कि किसी अनाथ, निराश्रित तथा सेवा-भावी एक ऐसी लड़की से शादी क्यों न की जाये जो मेरे विचारों तथा कार्यों की समर्थिका हो और मेरी अनुपस्थिति में इन दीन-हीन तथा निराश्रित लोगों की भोजन व्यवस्था तथा सेवा कर सके। जल्दी ही मित्रों की सहायता से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


उनकी यह भी आवश्यकता पूरी हो गई और उन्हें एक साधारण शिक्षित और सेवाभाविनी लड़की मिल गई।

श्रीमती कागावा का नाम 'स्प्रिग' था, जिसका अर्थ है—वासंती, जब पहली बार अपनी सुसराल कागावा के उस अनाथालय में आईं, तब उनका वह महादेव की बारात जैसा परिवार देखकर हँस पड़ीं। उन्होंने देखा कि लँगड़े, लूले, अपाहिज, अंधे, रोगी, वृद्ध तथा बालक तरह-तरह के प्राणी आवभगत में खड़े उनका स्वागत कर रहे हैं। वे हँसकर कागावा से बोली—प्रियतम ! अपना कुटुंब तो बड़ा विचित्र है। मैं एक अच्छी गृहिणी की तरह इनकी जी-जान से सेवा करूँगी—यह विश्वास तो आपको रखना ही चाहिए।

श्रीमती वासंती ने जो कहा वही किया। वे तुरंत सेवा तथा व्यवस्था में लग गईं। सबसे पहले उन्होंने अपने और अपने पति के साथ परिवार के सदस्यों तथा आय का अनुपात लगाकर बजट बनाया और खुद बाजार जाकर मोटे से मोटा अनाज तथा सस्ती से सस्ती तरकारियाँ खरीद लाईं और उनसे अपनी पाक कुशलता और मितव्यता द्वारा इतना सुंदर और सस्ता भोजन बनाकर सबको खिलाया कि उन्हें उन अनाथों तथा असहायों से आशीर्वाद तथा प्रशंसा के इतने फूल मिले कि उनका तन, मन और आँचल भर गया और न समा सके तो वे आँखों के रास्ते टपक उठे। उनकी आत्मा कह उठी उफ ! सेवा में इतना विशाल सुख ! श्रीमती वासंती ने घर की व्यवस्था तथा सदस्यों की सेवा का दायित्व अपने ऊपर लेकर पति को और विस्तृत सेवा क्षेत्र के लिए मुक्त कर दिया।

कागावा एक दिन बस्ती के एक मात्र शौचालय की सफाई में जुट पड़े। वे बस्ती की गंदगी के मूल कारक को ही सबसे पहले दूर कर देना चाहते थे। उनको तन, मन से उस कार्य में लगा देखकर बस्ती के दूसरे लोग भी लग गये और तत्काल सफाई का एक आंदोलन चल पड़ा, जो आगे भी एक साप्ताहिक कार्यक्रम के रूप में चलता रहा। कागावा के तत्त्वावधान में बस्ती के लोगों ने शौचालय के विषय में एक व्यवस्था बना डाली, वह यह कि इसमें केवल स्त्रियाँ ही जायें और निवृत्त होने के बाद उस पर मिट्टी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


डाला करें और पुरुष यथासंभव बाहर मैदानों तथा खेतों में जाने का प्रयत्न करें। साथ में एक खुरपी ले जायें और गड्ढा खोदकर निवृत्त हो और तदंतर उस पर मिट्टी डालें। इसके साथ ही कागावा ने जगह-जगह सोखता गड्ढे बनवाये और खुड्डियों की व्यवस्था कराई। इस प्रकार बस्ती की गंदगी का मूल स्थल ही जब साफ रहने लगा, तो लोग अपने घरों की सफाई क्यों न करते ? घरों की सफाई के दैनिक तथा साप्ताहिक कार्यक्रम चलने लगे और वह न देखी जाने वाली शिंकावा की गंदी बस्ती अब और बस्तियों के लिए एक उदाहरण बन गई।

सफाई की प्रवृत्ति जगाकर कागावा ने शिक्षा की ओर ध्यान दिया। वे तथा उनकी पत्नी बस्ती के बच्चों को दोनों समय दो घंटे पढ़ाने लगे। बच्चों की पढ़ाई में होने वाला सारा खर्च वे अपने पास से ही करते थे। इस प्रकार धीरे-धीरे शिक्षा का विकास करके उन्होंने वहाँ एक पाठशाला स्थापित कर दी।

कागावा नित्य सायंकाल सत्संग बुलाते और उसमें लोगों को शराब, मद्य, जुआ तथा व्यभिचार छोड़ देने की प्रेरणा देते। वे उन्हें उनसे होने वाली शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय हानियाँ बतलाते और उनको छोड़ देने से होने वाले लाभों पर प्रकाश डालते।

उन्होंने बहुत बार वेश्याओं की बैठक की और बहुत बार उनके घरों पर जाकर उनकी उस वृत्ति के दोष बतलाये और प्यार-पूर्वक मेहनत, मजदूरी द्वारा पावन जिंदगी जीने की प्रेरणा दी। वे वेश्याओं को माता, बहन तथा बेटी का संबोधन देते। उनके हीन हृदयों में आदरपूर्वक स्वाभिमान जगाते और जीविका-उपार्जन के अन्य उपाय बताते ही नहीं, बल्कि उनके लिए सहायता भी करते।

जन-कल्याण की सच्ची सद्भावना से किये हुए प्रयत्न कभी विफल नहीं जाते। बस्ती का सुधार शुरू हो गया। लोगों के घर साफ रहने लगे। शरीर और कपड़े स्वच्छ रहने लगे और सभी लोग अपने साथ बस्ती की सफाई का भी ध्यान रखने लगे। स्त्रियों के स्वभाव मधुर तथा सामंजस्यपूर्ण बनने लगे। बच्चे पढ़ने तथा स्वस्थ रहने लगे। बहुत से शराबियों तथा जुआरियों ने अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


व्यसन छोड़ दिये। वेश्याओं में से बहुतों ने चरखा कातकर, कारखानों में नौकरी करके और अन्य प्रकार की मजदूरी द्वारा अपना भरण करना शुरू कर दिया। शिंकावा का यह सुधार स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगा और लोग सत्य पर चलने का प्रयत्न करने लगे।

किंतु यह सब इसी प्रकार सरलतापूर्वक ही नहीं होता गया। इसके लिए कागावा और उनकी पत्नी को बड़ी यातना तथा तिरस्कार उठाकर धैर्य की परीक्षा देनी पड़ी। बस्ती तथा नगर के धूर्त लोग जो उनकी अचेतना से लाभ उठाते थे, शराब, अफीम आदि बेचने वाले जो उनके पैसे लूटते थे, वेश्याओं के दलाल और चकले चलाने वाले दुष्ट सबके सब कागावा से नाराज हो गये और यहाँ तक कि उन दोनों को न केवल पीटा ही, बल्कि मार डालने तक की कोशिश की। पर वे देवोपम दंपत्ति अपने सत्पथ और सत्कर्मों में लगे ही रहे। उन्होंने कष्ट ही नहीं, मृत्यु तक की परवाह नहीं की। संतवृत्ति ने तो उन दोनों को मानापमान की भावना से परे ही कर दिया था।

इतना ही क्यों, रोगियों की सेवा करते-करते और बीमारों के संपर्क में रहते-रहते कागावा को क्षय तक हो गया। सारा शरीर खुजली से भर गया और भयंकर ट्रोकोमा ने तो उनकी दृष्टि ही ले ली। पर वे उस दशा में भी लोगों की सेवा करते रहे। एक दिन भी बिस्तर पर पड़कर बीमारी नहीं मनाई।

उनके उपकार कार्य देखकर बदमाशों और लुच्चों ने उन्हें मारा, गोली और छुरे चलाये, चोरी की, लूटा और गाँठ काटी। पर सहनशील कागावा ने सब कुछ सहा और उनका कल्याण ही चाहा। वेश्याओं को सत्पथ का उपदेश करते हुए श्रीमती कागावा को एक चकलेदार ने एक बार इतना मारा कि बेचारी लोहूलुहान होकर बेहोश हो गईं। पर फिर भी वे अपने सत्कर्म में लगी रहीं। एक बार एक बदमाश ने दीवाल में पिस्तौल की गोली धँसाकर कागावा को धमकाया और शराब पीने के लिए पैसे माँगे। कागावा ने साफ कह दिया कि तुम मुझे गोली भले मार दो, पर मैं तुम्हें शराब जैसी दुष्ट चीज के लिए पैसे नहीं दूँगा। उससे तुम्हारी तंदुरुस्ती खराब होगी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



तुम्हारी अपराधवृत्ति बढ़ेगी, तुम व्यभिचार के लिए प्रेरित होगे। मेरा ध्येय लोगों को बुराई से अच्छाई की ओर लाना है। शराब के लिए तुम्हें पैसे देकर मैं पाप न करूँगा। हाँ, यदि तुम कोई अच्छी और स्वास्थ्यदायक चीज खाना चाहो, अपने लिए या बच्चों के लिए कपड़ा बनवाना चाहो, घर पर कोई चीज ले जाना चाहो, तो मैं तुम्हें अभी पैसे दे सकता हूँ। तुम हामी भरो कि पैसा खराब काम में खर्च नहीं करोगे, तो लो यह पाँच रुपये देता हूँ ले जाओ और किसी अच्छे काम में खर्च करो। कागावा ने रुपये निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिये। बदमाश बड़ी देर तक कागावा का मुँह देखता रहा और सोचता रहा कि क्या संसार में ऐसे अच्छे आदमी भी रहते हैं, जो मौत का संदेश लिए खड़े व्यक्ति का भी हित तथा कल्याण चाहता है। उसके प्रति ऐसी सद्भावना रखता है। मर जाने को तैयार है, पर गलत बात को प्रोत्साहित करने को तैयार नहीं। उसने पिस्तौल फेंक दी और कहा—"देवता ! आज से मैं भला आदमी हो गया, अब कभी कोई अपराध नहीं करूँगा। इस प्रकार परोपकारी कागावा के प्रभाव से बदमाशों का सरदार बदल गया और फिर तब से बस्ती में बदमाशों का कोई उपद्रव नहीं हुआ।"

कागावा के कामों के साथ उनका नाम भी फैलने लगा। नागरिकों का ही नहीं बल्कि सरकार का भी ध्यान उनकी ओर और उनकी प्रेरणा तथा परामर्श से देश की गंदी बस्तियों की ओर गया। नागरिकों ने अपने नगरों की और सरकार ने सारे देश की गंदी बस्तियों के सुधार की योजनाएँ प्रारंभ कर एक आंदोलन चला दिया। जापान देश का कायाकल्प होने लगा और गंदा मानव-समाज सच्चे तथा सच्चरित्र राष्ट्र के रूप में विकसित होने लगा। कुछ ही दिनों में जापान के विशाल नगरों—टोकियो, ओसाका, याकोहामा, कोबे, क्योटो और नागोयाके की गंदी बस्तियाँ विलुप्त हो गईं और उनके स्थान पर सभ्य, सुरक्षित, शिष्ट तथा स्वस्थ लोगों की आबादी दिखलाई देने लगी। इस प्रकार एक व्यक्ति के तप-त्याग तथा प्रयत्नों ने पूरे राष्ट्र का ही कायाकल्प संभव कर दिया। सेवा तथा सच्ची सद्भावना में दैवी शक्ति होती है, जिसे कोई कागावा जैसा तपस्वी बनकर प्राप्त कर सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



पूरा देश ही कार्यक्षेत्र बन जाने पर कागावा समाज-सुधार के तरीकों तथा उनके रूपों का अध्ययन करने के लिए अमेरिका गये और दो वर्ष तक प्रिंसटन विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र का अध्ययन करने के साथ-साथ मजदूरों तथा किसानों की समस्याओं तथा उनके उपायों का भी हल करते रहे। अमेरिका से उपार्जित ज्ञान लेकर जब वे देश आये, तब उनका समारोह के साथ नागरिक अभिनंदन किया गया। उसी समारोह में टोकियो के महापौर ने उनसे दो हजार रुपये मासिक वेतन पर निगम की ओर से समाज-सेवा करने की प्रार्थना की। पर कागावा ने विनम्रतापूर्वक इनकार करते हुए कहा—"समाज सेवा तो मेरा धर्म, ध्येय, जीवन और लक्ष्य ही है, उसके लिए वेतन लेने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। सेवा तथा सद्भावना बेचना मैं किसी भी पाप से कम नहीं समझता। नगर की हर योजना में मेरा पूरा सहयोग रहेगा और मेरे योग्य जो सेवा हो उसके लिए आप मुझे कभी भी आह्वान कर सकते हैं। मैं समाज की हर सेवा और आपकी हर सहायता करने के लिए सदैव प्रस्तुत हूँ।"

कागावा ने मजदूरों की समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि कारखानेदार तथा ठेकेदार लोग उनका बुरी तरह शोषण करते हैं। उनके श्रम का पूरा पारिश्रमिक उन्हें नहीं मिलता। उनके स्वास्थ्य तथा उनके रहन-सहन का स्तर उठाने की कोशिश नहीं की जाती। किसान मजदूर किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होते हैं। उन्हीं के आधार पर राष्ट्रों की उन्नति तथा विकास होता है। जब तक इनका विकास तथा मजदूरों का उद्धार न किया जायेगा, तब तक जापान सुदृढ़ तथा संपन्न न बन सकेगा। निदान स्वरूप उन्होंने मजदूरों में चेतना जगाने के लिए उनका संगठन बनाना और उन्हें अपने पैरों खड़े होकर अपना उद्धार करने की प्रेरणा देने लगे। इस कर्म के लिए कागावा को समाज के शोषकों का निशाना बनकर जेल भी काटनी पड़ी। पर वे अपने मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलते रहे। जेल से निकलकर उन्होंने राष्ट्र स्तर पर एक विशाल जापान-मजदूर-संघ की स्थापना की। उनकी स्थापित की हुई यह संस्था आगे चलकर मजदूरों के लिए बड़ी हितकारी सिद्ध हुई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



उसकी छत्र-छाया में मजदूरों ने अपने बहुत से अधिकार प्राप्त किये।

मजदूर संघ की स्थापना करने के बाद कागावा किसानों की सेवा की ओर बढ़े और उन्होंने—अखिल-जापान-किसान-संघ की नींव अपने निवास स्थान पर ही डाली। वे नगरों में तो किसानों की सभाएँ करते ही थे। गाँवों में भी जाते थे और लोगों में चेतना जगाने का प्रयत्न किया करते थे। उन्हें पता था कि बदमाश गाँव से ही अबोध कन्याओं को बहका लाते हैं और शहरों में उन्हें वेश्या बना कर अपनी आय का साधन बनाते हैं। पूँजीपतियों के गुर्गे गाँवों से ही नौजवानों को बुला लाते हैं और कारखानों में सस्ते मजदूर बनाकर शोषण की वेदी पर चढ़ा देते हैं। कागावा ने ग्रामीण किसानों तथा उनके बच्चों को उनकी भूलें और धूर्तों की चालें बतलाकर, गाँव में रहने और खेती का विकास करने की प्रेरणा दी, जिससे जापान के कृषि उद्योग में अभूतपूर्व उन्नति हुई।

जापान के गांधी ये कागावा केवल समाज-सेवक ही नहीं थे, बल्कि एक प्रकांड विद्वान् और लोकप्रिय लेखक भी थे। कागावा ने लगभग पचास ग्रंथ लिखे हैं, जिनकी बारह लाख प्रतियाँ बिकीं और जो संसार की लगभग सभी भाषाओं में भाषांतरित किये गये। उनके 'एक्रास द डेथ लाइन' (मृत्यु-रेखा के पार), 'द शूटर ऐट द सन' (सूर्य पर संधान करने वाला), 'पासिंग फ्राम स्टार टु स्टार' (एक तारे से दूसरे तारे पर गमनागमन), 'ए ग्रेन ऑफ ह्वीट' (गेहूँ का एक दाना) आदि ग्रंथ बहुत ही प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय हुए हैं। जिसका प्रमाण यह है कि इन ग्रंथों की क्रमशः ढाई लाख, सवा लाख, एक लाख और एक लाख प्रतियाँ अब तक बिक चुकी हैं। कागावा के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे केवल कल्पना-लोक में विहार करने वाले कल्पक नहीं हैं। वे यथार्थ के ठोस धरातल पर अपने हृदय के रंग से लिखते रहे हैं। साथ ही उनकी लेखनी के विषय मनुष्य, समाज, विज्ञान तथा मानव-कल्याण ही रहे हैं।

इतने बड़े और लोकप्रिय लेखक की आय का अनुमान लगा सकना कठिन है। तथापि जब वे कम से कम रायल्टी पर सस्ती से सस्ती पुस्तकें निकलवाते रहे हैं, तब उन्हें तीन लाख रुपये से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


अधिक आय होती रही है। किंतु उन्होंने अपना रहन-सहन बिल्कुल वैसा ही रक्खा, जैसा कि शिंकावा की कोठरी में था। वैसा ही खाते और वैसा ही पहनते रहे हैं। इन अपरिग्राही महात्मा कागावा ने टोकियो जैसी रंगीन बस्ती में भी कबाड़ी से थोड़ा-सा सामान खरीदकर शहर के बाहर एक कोने में अपने हाथ से लकड़ी का एक छोटा-सा घर बना लिया था और उसमें ही रहते रहे। उनका कुल मिलाकर सौ रुपये माहवार से अधिक खर्च न था। अपने ऊपर इतना कम खर्च करने वाले कागावा, अपनी लाखों रुपयों की आय समाज की सेवा तथा दीन-दुखियों की सहायता और बच्चों की शिक्षा पर ही खर्च करते थे। यह रोमांचकारी मितव्ययता तथा उदारता अपने-अपने स्थान पर न केवल प्रशंसनीय ही है, बल्कि पूज्यनीय भी है। ऐसे उदार मितव्ययी जिस देश-समाज में होंगे उसका उद्धार तथा उन्नति तो दैव भी नहीं रोक सकता।

मितव्ययता तथा जीवन-निर्वाह पर अपने विचार प्रकट करते हुए कागावा ने एक स्थान पर कहा है—

"जीवन-निर्वाह का सबसे अच्छा तरीका यही है कि इतनी सरलता और सादगी के साथ रहा जाये कि किसी दूसरे से सहायता लेने की जरूरत न पड़े। यदि आदमी अपने हाथ से बनाई कुटिया में रहे, अपने हाथ से सब्जी तथा शाक उगाये, अपने हथकरघे पर बुना हुआ कपड़ा पहने, खुद अपने हाथ से अपनी रसोई बनाये और अपने घर का प्रबंध स्वयं अपने हाथ से करे, तो वह एक आध्यात्मिक स्वाधीनता का सुख पा सकता है। उसे न स्वयं किसी पर निर्भर रहना पड़े और न किसी दूसरे को अपना सेवक बनाना पड़े। इस आत्मसेवा से समाज तथा संसार की बहुत-सी समस्याएँ सुलझ सकती हैं। यदि मनुष्य किसी शांत जलाशय के किनारे वृक्षों की सघन छाया में अपनी झोंपड़ी बना ले, पशु-पक्षियों तथा वनस्पति जगत् से निकट का संबंध रखता हुआ प्राकृतिक जीवनयापन करे, तो फिर उसे किस मुक्ति-भुक्ति की आवश्यकता शेष रह सकती है ? वह जीवन-मुक्त होकर आनंदमय और उन्नत जीवन जी सकता है और श्री कागावा ऐसा जीवन जीते रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



वर्तमान समय में जापान ने विशेष रूप से भौतिकवाद को अपना रखा है और गत सौ या सवा सौ वर्ष से वह पौर्वात्य आदर्श की अपेक्षा पाश्चात्य आदर्श का अनुकरण करने की अधिकाधिक चेष्टा कर रहा है। इसका नतीजा यह हुआ है कि जहाँ वह उद्योग-धंधों, व्यापार-व्यवसाय और धन-संपत्ति की दृष्टि से प्रगति कर रहा है, उसमें स्वार्थपरता तथा अनैतिकता आदि के वे दोष बढ़ते जाते हैं, जिनकी चर्चा हम अमेरिका आदि के संबंध में सुना करते हैं। वहाँ के पूँजीपति अपनी संपत्ति को बढ़ाने के लिए गरीबों के शोषण में कुछ भी संकोच नहीं करते और इससे जनता में पूँजीवादी समाज की अनेक बुराइयाँ पनपती और फैलती जाती हैं।

ऐसे वातावरण में कागावा जैसे परमार्थ-पथिक का उदय होना परमात्मा की महती अनुकंपा है। जैसे भारतवर्ष में गत डेढ़ सौ वर्षों में दादाभाई नौरोजी, तिलक, लाजपतराय आदि से लेकर महात्मा गांधी तक अनेक ऐसे महामानवों का आविर्भाव हुआ कि जिन्होंने अपने स्वार्थ की तिलांजलि देकर विदेशी-शासन में जनता के गिरते हुए मनोबल को ऊँचा उठाया और उसके स्वाभिमान तथा चरित्र की रक्षा करते हुए स्वाधीनता आंदोलन चलाया, उसी प्रकार कागावा ने भी जापान में बढ़ती हुई भौतिकता और अनैतिकता के विरुद्ध झंडा खड़ा किया और केवल अपने बल-बूते पर ही उस निम्नगामी धारा के खतरों से बचने के लिए एक प्रकाश स्तंभ निर्मित कर दिखाया। उनका जीवन इस बात का एक ज्वलंत उदाहरण है कि एक बिल्कुल साधारण और साधनविहीन व्यक्ति भी यदि वास्तव में परोपकारी जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर ले और अपनी शक्तियों को समझ-बूझकर परहित के कार्यों में लगाने लगे, तो वह निश्चय ही इतना काम कर सकता है कि जिसे देखकर संसार दंग रह जाय और जिसके परिणामस्वरूप एक ऐसी नई धारा का आविर्भाव हो जाय, जो करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित करने की सामर्थ्य रखती हो।

कागावा के जीवन से हम यह शिक्षा भी ग्रहण कर सकते हैं कि जनसेवा के लिए बड़े-बड़े समारंभों, बड़ी संस्थाओं और बड़े साधनों की कोई खास आवश्यकता नहीं है। उन्होंने अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सेवाकार्य बहुत छोटे पैमाने पर पूर्ण स्वावलंबी रहकर आरंभ कर दिया और उसी को थोड़े समय में इस स्थिति तक पहुँचा दिया कि उससे अनेक दुर्दशाग्रस्त व्यक्तियों का उद्धार हो गया, अनेक लोगों को नई जीवन-राह मिल गई और अनेक दुर्व्यसनों से बचकर उपयोगी नागरिक बन गये हैं। जब हम कागावा के रहन-सहन पर विचार करते हैं, तो उनमें एक सच्चे संन्यासी के दर्शन करते हैं, जो अभावग्रस्त लोगों की सहायता के लिए परिश्रम तो सदैव करता रहा, पर स्वयं सूखी रोटी पर गुजर कर लेता है। इसे भाग्य का खेल अथवा एक दुर्दैव ही समझना चाहिए कि जिस भारत-भूमि में संन्यास के आदर्शों का बीजारोपण अति प्राचीनकाल में किया गया। वहाँ के 'संन्यासी' नामधारी आज जनता की सेवा और उत्थान करने के बजाय उसे उलटा अंधकार के गर्त में ढकेल रहे हैं और उसी की कमाई से स्वयं आलस और प्रमाद में पड़े रहकर मालपुआ और मोहनभोग उड़ा रहे हैं। दूसरी ओर जापान जैसे पश्चिमी आदर्श की ओर उन्मुख देश में कागावा जैसे त्यागी और ऋषि-जीवन वाले व्यक्ति निकलते हैं, जो अपनी विद्या और परिश्रम का फल दूसरों को देकर 'परोपकार' और 'परमार्थ' के शब्दों का जीवित उदाहरण बनकर लाखों का हित-साधन करते हैं।

भारतवर्ष में इस समय जो अनगिनती सामाजिक दोष और अनैतिक आचरण फैले हुए हैं, उनके निराकरण के लिए एक नहीं अनेक 'कागावा' जैसे संतों की आवश्यकता है। जिस दिन यहाँ 'धर्म' जबानी जमा-खर्च करने वाले और रंगे वस्त्रों को ही संन्यास का प्रमाण मानने वाले 'संतों' और 'साधुओं' की जगह कागावा जैसे दो-चार कर्मठ, सुयोग्य और अपना ही उदाहरण उपस्थित करने वाले संन्यासी निकल आयेंगे, उस दिन देश का उद्धार होने में विलंब न होगा।

❑ ❑ मूल्य- ३.०० रुपये

मुद्रक–युगान्तर चेतना प्रेस शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरांचल)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



मूल्य- तीन रुपया

# : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

**गायत्री परिवार** जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

**Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at**
**www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org**